9 बाल अदालत

उन्मुखीकरण

हरे-भरे जंगल, चहचहाते पक्षी आज कल्पना के विषय बन गये हैं। भूकंप, बाढ़ आदि प्रकृति की ओर से मनुष्य को दी गयी चेतावनी है परंतु सब कुछ जानते हुए भी आज मानव इसे अनदेखा कर रहा है। वास्तविकता यह है कि बढ़ती आबादी और आधुनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगलों को बड़ी बेरहमी से काटा गया है। जिसके कारण मौसम-चक्र बदला और परिणामस्वरूप कहीं सूखा और कहीं बाढ़ देखने को मिलती है। मनुष्य आज पेड़-पौधों से नाता तोड़ने के दुष्परिणाम झेल रहा है।

प्रश्न

1. मनुष्य किस प्रकार प्रकृति पर आश्रित है?
2. मौसम चक्र में परिवर्तन के प्रमुख कारण कौन से हैं?
3. जंगलों के काटे जाने के दुष्परिणाम क्या हो सकते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी लेखन के लिए प्रेरित करना, संवाद बोलने के कौशल का विकास करना, भाषा व रचना शैली की विविधता से अवगत कराना आदि इस पाठ के मुख्य उद्देश्य हैं।

विधा विशेष

एकांकी साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है। एकांकी में किसी एक ही विषय का चित्रण किया जाता है। प्रस्तुत पाठ पर्यावरण संबंधित एकांकी है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : पर्यावरण के बिगड़ने से आगामी भविष्य में और कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। पर्यावरण हमारा रक्षा कवच है। इसका संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है।

पात्र परिचय :

1. न्यायाधीश
2. सरकारी वकील
3. प्रतिवादी वकील
4. दरबान
5. घीसाराम (लकड़ी व्यापारी)
6. किरोड़ीमल (फैक्ट्री का मालिक)

(बच्चे खेल-खेल में अभिनय कर रहे हैं। मंच पर अदालत का दृश्य हैं। सामने एक बड़ी कुर्सी पर न्यायाधीश विराजमान है। काले कोट पहने दो वकील न्यायाधीश के सामने खड़े हैं। दरवाज़े पर एक दरबान खड़ा है।)

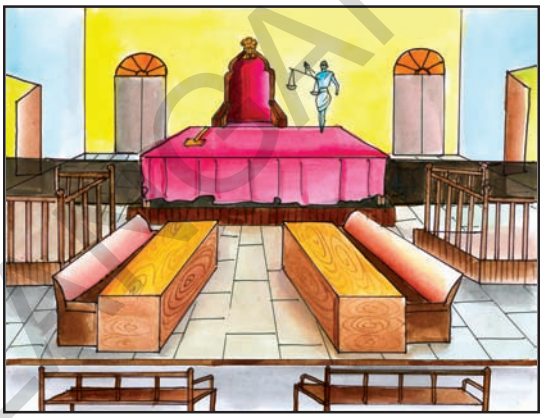

न्यायाधीश : (मेज़ पर हथौड़ा बजाते हुए) आर्डर! आर्डर! आज का पहला मुक़दमा प्रस्तुत किया जाए।

सरकारी वकील : महोदय, आज का पहला मुक़दमा लकड़ी के व्यापारी घीसाराम के विरुद्ध है। उस पर यह आरोप है कि वह अंधाधुंध पेड़ों की कटाई करके जंगल को वीरान कर रहा है।

न्यायाधीश : अभियुक्त घीसाराम को हाज़िर किया जाए।

दरबान : घीसाराम पुत्र भीखा राम हाज़िर हो.....।

(घीसाराम अदालत के कटघरे में आकर खड़ा होता है और गीता पर हाथ रखकर शपथ लेता है।)

घीसाराम : मैं शपथ लेता हूँ कि जो कहूँगा, सच कहूँगा। सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा।

सरकारी वकील : घीसाराम, आप पर जो आरोप लगाया गया है, उसके बारे में क्या आप अपनी सफ़ाई में कुछ कहना चाहेंगे?

घीसाराम : न्यायाधीश जी, मेरे ऊपर लगाया गया इल्ज़ाम बिल्कुल बेबुनियाद है। लकड़ी का व्यापार हमारा खानदानी पेशा है। रही पेड़ काटने की बात सो घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?

सरकारी वकील : अच्छा तो यह बताइए कि क्या आप पेड़ काटने से पहले अनुमति लेते हैं?

घीसाराम : (हँसते हुए) वकील साहब! भला पेड़ से क्या अनुमति लेना?

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, मेरा मुवक्किल अधिक पढ़ा-लिखा नहीं है। वह एक सीधा-सादा लकड़ी का व्यापारी है। जो लकड़ी काटने व बेचने का अपना पुश्तैनी धंधा कर रहा है।

SCERT TELANGANA

सरकारी वकील : न्यायाधीश महोदय, क़ानून से अनजान होना किसी अपराध को कम नहीं करता। यूँ भी घीसाराम जिस इलाके से पेड़ कटवा रहा था, उस क्षेत्र में जाने पर भी प्रतिबंध लगा हुआ है। फिर पेड़ काटने का तो प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, घीसाराम को साफ़-साफ़ अपराधी नहीं ठहराया जा सकता, वह निर्दोष है, अतः उसे कोई सज़ा देना मुनासिब नहीं है।

सरकारी वकील : महोदय, मेरा मानना है कि घीसाराम ने अवश्य ही क़ानून को तोड़ा है। यदि इस प्रकार क़ानून तोड़ने वाले को माफ़ कर दिया गया तो लोगों पर इसका ग़लत असर पड़ेगा और सभी अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों को काट-काट कर पर्यावरण को हानि पहुँचाते रहेंगे। अतः घीसाराम को सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाए, जिससे भविष्य में कोई भी इंसान पेड़ काटने की गुस्ताख़ी न कर सकें।

न्यायाधीश : अदालत दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद इस निर्णय पर पहुँची है कि निस्संदेह घीसाराम क़ानून से अनजान है किंतु उसने गंभीर अपराध किया है। इसलिए अदालत घीसाराम को यह आदेश देती है कि वह भविष्य में किसी भी पेड़ को काटने से पूर्व वन विभाग से अनुमति लेगा। इसके साथ ही अदालत घीसाराम को हुक्म देती है कि वह अपने गाँव के चारों तरफ 100 पेड़ लगवाएगा और अगले वर्ष तक उनकी देखभाल करेगा।

प्रश्न
1. घीसाराम पर क्या आरोप था?
2. पर्यावरण को हानि कैसे हो रही है?
3. पर्यावरण की रक्षा के प्रति हमारा क्या दायित्व है?

(घंटी बजती है, सभी मंच से बाहर हो जाते है)

न्यायाधीश : आर्डर-आर्डर, आज का अगला मुक़दमा प्रस्तुत किया जाए।

सरकारी वकील : महोदय, आज का अगला मुक़दमा गाँव के बाहर लगी फैक्ट्री के मालिक सेठ किरोड़ीमल के विरुद्ध है। उस पर आरोप है कि वह फैक्ट्री के गंदे पानी और तमाम कूड़े-कचरे को गाँव के पास बहने वाली नहर में फेंकता है, जिससे नहर का पानी प्रदूषित हो रहा है। फैक्ट्री की चिमनियों से निकलने वाला धुआँ भी ग्रामवासियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

न्यायाधीश : किरोड़ीमल को हाज़िर किया जाए।

दरबान : किरोड़ीमल हाज़िर हो.....।

(सेठ किरोड़ीमल कटघरे में आकर खड़ा होता है, गीता पर हाथ रखकर शपथ लेता है।)

किरोड़ीमल : मैं शपथ लेता हूँ कि जो कुछ कहूँगा, सत्य कहूँगा। सत्य के सिवाय और कुछ

SCERT TELANGANA

न कहूँगा।

सरकारी वकील : किरोड़ीमल जी, आपकी फैक्ट्री कब से चल रही है।

किरोड़ीमल : यही, पिछले 4-5 वर्ष से।

सरकारी वकील : आप यह बताएँ कि आप फैक्ट्री से निकलने वाले गंदे पानी को कहाँ फेंकते हैं?

किरोड़ीमल : वकील साहब गंदा पानी कहीं बाहर फेंकने की क्या ज़रुरत हैं। पास में ही नहर बहती है। उसी में फैक्ट्री का गंदा पानी भी बहकर दूर चला जाता है। आस-पास गंदगी फैलाने से तो बीमारियाँ फैलने का ख़तरा रहता है, न?

सरकारी वकील : सेठ जी, क्या आप जानते हैं कि ऐसा करके आप नहर के जल को भी प्रदूषित कर रहे हैं।

किरोड़ीमल : वकील साहब, आप कैसी बात करते हैं, हमने तो बचपन से ही बड़े-बूढ़ों से सुना है कि बहता पानी तो सदा शुद्ध होता है। उसे कौन दूषित कर सकता है।

सरकारी वकील : आप पर यह आरोप भी है कि आपने गाँव की हवा को भी अशुद्ध कर दिया है।

प्रतिवादी वकील : योर ऑनर, मेरे मुवक्किल पर लगाए गए आरोप बेबुनियाद हैं, असलियत यह है कि किरोड़ीमल अपनी मेहनत के दम पर साधारण मिस्त्री से सेठ किरोड़ीमल बना है, इसलिए गाँव के लोग किरोड़ीमल से ईर्ष्या करते हैं। उसने बकायदा अनुमति लेकर गाँव से बाहर फैक्ट्री लगायी थी। अब गाँव ही फैलते-फैलते वहाँ पहुँच गया तो इसमें किरोड़ीमल का क्या कसूर हैं?

सरकारी वकील : महोदय, मेरे साथी वकील ने तो वही बात कर दी, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे। यह ठीक है कि सेठ किरोड़ीमल को फैक्ट्री बनाने की स्वीकृति किसी ने नहीं दी थी। फैक्ट्री-क़ानून के अनुसार जितनी ऊँची चिमनियाँ होना चाहिए, इन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया। इसका परिणाम यह है कि जब भी हवा का रुख बस्ती की ओर होता है तो चिमनियों से निकलने वाला धुआँ सारे ग्रामवासियों का साँस लेना दूभर कर देता है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब गाँव के हर घर में कोई न कोई साँस का रोगी होगा।

प्रतिवादी वकिल : योर ऑनर, मुझे अपने साथी वकील की दलील पर हँसी आती है भला हवा पर भी किसी का ज़ोर चला है उसका जी चाहे, उधर ही बहने लगती है। उस पर तो क़ानून की बेड़ियाँ नहीं डाली जा सकती।

सरकारी वकील : महोदय, ठीक है कि क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है। इसलिए सेठ जी फैक्ट्री की चिमनियों को तो ऊँची करवा ही सकते हैं और फैक्ट्री के कूड़े-कचरे को नहर में न डालकर कहीं दूर भिजवा सकते हैं।

SCERT TELANGANA

इन्होंने वायु व जल दोनों को दूषित करके जनता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया है। इसलिए मेरा आग्रह है कि इन्हें सख़्त से सख़्त सज़ा दी जाएँ ताकि कोई भी भविष्य में पर्यावरण को दूषित करने का साहस न करें।

न्यायाधीश : दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अदालत इस निर्णय पर पहुँची है कि सेठ किरोड़ीमल ने जाने-अनजाने में पर्यावरण को क्षति पहुँचाई है। इसलिए अदालत इन्हें हुक्म देती है कि एक सप्ताह के भीतर यह अपनी फैक्ट्री की चिमनियों को ऊँचा करवाएँ, साथ ही साथ फैक्ट्री के कूड़े-कचरे को नहर में आज से ही डालना बंद करके अपने खर्चे पर उसकी सफ़ाई की व्यवस्था करें। गाँव का धनी व्यक्ति होने के नाते सेठ किरोड़ीमल को चाहिए कि वह अपने गाँव में पर्यावरण को स्वच्छ रखने वाली योजनाओं में अपनी आय का दो प्रतिशत भाग खर्च करके लोगों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करें, जिससे सभी पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को लेकर सजग हो सकें। अब अदालत बर्खास्त होती है।(लंबी घंटी बजती है और सब खड़े हो जाते हैं।)

4. किरोडीमल पर क्या आरोप लगाया गया? क्यों?
5. ग्रामवासियों पर धुआँ क्या दुष्प्रभाव डाल रहा है?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है, न पीने के लिए स्वच्छ जल' - इस स्थिति का मनुष्य के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? अपने विचार लिखिए।
2. पर्यावरण संरक्षण के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

(आ) पाठ पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. घीसाराम स्वयं को दोषी क्यों नहीं समझता था?
2. न्यायाधीश ने घीसाराम को क्या सज़ा दी?
3. बहते जल के विषय में किरोड़ीमल के क्या विचार थे?
4. सेठ को अदालत द्वारा क्या सुझाव दिया गया है?
5. इस एकांकी के द्वारा आपको क्या शिक्षा मिलती है?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

1. क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है।
2. घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या?

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. प्रकृति के बिना मानव जीवन संभव नहीं। पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार है। भारतीय संस्कृति में इस तथ्य को बड़ी गहराई से समझा गया। हमारे पौराणिक ग्रंथों में

SCERT TELANGANA

प्रकृति के विभिन्न तत्वों की पूजा का वर्णन मिलता है। हमारे देश में तुलसी, पीपल, बरगद आदि की आराधना आज तक की जाती है। वृक्ष प्रकृति की सुंदर और अमूल्य भेंट हैं। इनके प्रति आदर का भाव रखने का मूल कारण यही था कि अति प्राचीन काल से भारतीय ऋषि-मुनियों ने इस तथ्य को जान लिया था कि वृक्षों के अभाव में मानव अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती।

1. पौराणिक ग्रंथों में किसका वर्णन मिलता है?
2. हमारे देश में किन वृक्षों की पूजा की जाती है?
3. वृक्षों के प्रति आदर भाव रखने का मूल कारण क्या था?
4. भारतीय ऋषि मुनियों ने किस तथ्य को जान लिया था?

2. नीचे दिये गये सरकारी विज्ञापन की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए।

1. प्रदूषण रोकने के उपाय बताइए।
2. जल स्रोतों के संरक्षण का महत्व बताइए।

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बाल अदालत एकांकी के मुख्यांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के क्या कारण हो सकते हैं? अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक भाषण-लेख तैयार कीजिए।

(ई) राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभयारण्यों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार उत्तर लिखिए।

1. शपथ, घोड़ा, सज़ा (पर्यायवाची शब्द लिखिए।)

SCERT TELANGANA

2. घोड़ा, जंगल, इंसान (वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. नीचे दी गयी कहावतों के वाक्य प्रयोग कर अर्थ बताइए।
   - घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खायेगा क्या
   - उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
   - एक तन्दुरुस्ती हज़ार नियामत
2. निर्दोष, पर्यावरण, निस्संदेह (विच्छेद कर संधि बताइए।)
3. हिंदी में अनुवाद कीजिए।

Hyderabad is a big city. There is a heavy traffic on its roads. The buses and cars and other vehicles release gasses which pollute the air. There are several industries in and around Hyderabad. These factories release a lot of smoke which pollutes the air.

(इ) 1. निम्न शब्द समूह के लिए एक शब्द (शब्द संक्षेप) लिखिए।

1. जन सामान्य से संबंधित
2. मुक़दमा चलाने वाला ।
3. जो प्रकृति से संबंधित हो।
4. जिसका प्रमाण न दिया जा सके।

2. इन वाक्यों को प्रश्नवाचक में बदलिए।

1. मुझे अपने साथी वकील की दलील पर हँसी आती है।
2. मेरे ऊपर लगाया गया इल्ज़ाम बिल्कुल बेबुनियाद है।
3. क़ानून हवा या पानी पर नहीं मनुष्य पर लागू होता है।
4. न्यायाधीश ने घीसाराम को सज़ा दी कि वह अपने गाँव के चारों ओर पेड़ लगवायें।

(ई) पदबंध मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं - संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि। जैसे-

1. श्याम का बड़ा भाई रमेश कल आया था। (संज्ञा पदबंध)
2. सुनीता परिश्रमी और होशियार लड़की है। (विशेषण पदबंध)
3. आयुष सुरभि का चुटकुला सुनकर हँसता रहा। (क्रिया पदबंध)
4. अरुणिमा धीरे-धीरे चलते हुए वहाँ जा पहुँची (क्रिया विशेषण पदबंध)

उदाहरण के अनुसार पाठ में आये कोई चार पदबंध ढूँढ़कर लिखिए।

परियोजना कार्य

प्रदूषण से पर्यावरण का संरक्षण करने के विविध उपाय बताते हुए एक 'पॉवर पाइंट' (PPT) बनाइए। उसका प्रदर्शन कक्षा में कीजिए।

SCERT TELANGANA

उपवाचक

☆ गुड़ियों का त्यौहार

-डॉ. विजय राघव रेड्डी

स्कूल के खुलने तक वेतन मिलेगा नहीं। बची हुई सारी रकम तुम्हारे पास ही है..... तुम्हारी मरज़ी, गुड़ियाँ खरीदोगी या बच्चों के लिए नये कपड़े सिलवाओगी या अपने लिए नयी साड़ी मँगवाओगी ... जो चाहो सो करो।'' बाज़ार से लौटकर कोट उतारते हुए मैंने 'कांतम्' से कहा।

''हाँ, हाँ, बड़ा खज़ाना रख छोड़ा है तुमने मेरे पास। कुल दस तो रुपये बचे हुए हैं। ऐसा कह रहे हो मानो बहुत बड़े नवाब के बेटे हो।'' कांतम् ने जवाब दिया मेरा मज़ाक बनाते हुए।

''अरे परसों जब 'कोंडपल्ली' जा रहा था, तब कहा होता तो चार-पाँच रुपयों की गुड़ियाँ ले आता।'' आँख मटकाते हुए मैंने कहा मानो किसी बड़े बाप का बेटा हो।

''बस, बस, बनाइए नहीं। कोंडपल्ली में काठ की गुड़ियों के सिवा कुछ नहीं मिलते।'' मुँह बिगाड़ते हुए कांतम् ने कहा।

बात बदलने के उद्देश्य से मैंने कहा, ''बस, अब चुप करो, देखा जाएगा।''

''आख़िर मेरी बात तो सुनिए, कुछ भी हो, इस साल कम से कम दस रुपयों की गुड़ियाँ अवश्य खरीदना होगा। पुरानी गुड़ियाँ सारी खराब हो गई हैं। बच्चे बहुत ज़िद कर रहे हैं, नयी गुड़ियों के लिए।'' कांतम् एक छोटा-सा व्याख्यान देती गयी।

मेरे सुनी अनसुनी-सा रह जाने से फिर उसने कहा, ''सुन रहे हो? आपसे ही कह रही हूँ। इस साल नयी गुड़ियाँ ज़रूर खरीदना होगा। अन्यथा इन पुरानी गुड़ियों को देखकर लोग हँसेंगे।''

'अच्छी बात है, उसी के बारे में सोच रहा हूँ।'' कहकर मैं भोजन के लिए उठा।

भोजन के बाद मैं बिस्तर पर लेट कर सोचने लगा - उधार तो अब मिलने का नहीं, कहीं पैसा मिल भी जाए तो भी दस रुपये गुड़ियों के लिए ख़र्च करने की इच्छा नहीं हो रही है। सोचते-सोचते मुझे एक उपाय सूझा। तुरंत कलम और कागज़ लेकर पत्र लिखने लगा।

सेवा में, बंदर

वेंकोजी एण्ड संस कंपनी,

विजयवाड़ा

महोदय,

अपना एक छोटा सा निवेदन करने के लिए मैं आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। यदि आप यह स्वीकार कर तदनुसार काम करेंगे तो आपकी कंपनी की उन्नति एवं आपका असीम लाभ होने की संभावना है।

SCERT TELANGANA

मैं आंध्र प्रदेश के लेखकों में थोड़ा बहुत नामी लेखक हूँ। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जो मेरी कहानियों को देखते ही न पढ़ता हो। मेरे शहर में एक नया पत्र निकल रहा है। लोगों का कहना है, उस पत्र की 20 हज़ार तक प्रतियाँ निकलती हैं। कहना ही नहीं, सचमुच यह बात सही है। इस स्थिति में आप यह मत सोचिए कि उसे केवल 20 हजार लोग ही पढ़ते हैं। हमारे देश में एक व्यक्ति के खरीदे हुए पत्र को कम से कम 20 लोग पढ़ते हैं।

उस पत्र के संक्रांति विशेषांक के लिए एक कहानी लिखने के लिए संपादक ने मुझसे अनुरोध किया है। उस कहानी में 'कांतम्' द्वारा बच्चों के साथ गुड़ियों की सजावट कराने की एक घटना लिखूँगा।

एक घटना क्या? सारी कहानी में गुड़ियों के बारे में, गुड़ियाँ खरीदना, 'कांतम्' द्वारा मेज़ पर अलंकरण करना, गुड़ियों का वर्णन आदि-आदि होंगे और आगे कहानी इस प्रकार होगी - अड़ोस-पड़ोस सब हमारी गुड़ियों को देखने आएँगे। वे इन गुड़ियों की सुंदरता, निर्माण-चातुरी, बढ़िया-फिनिश और टिकाऊपन देखकर मुग्ध होकर कांतम् से पूछेंगे कि आपने इन गुड़ियों को कहाँ से खरीदा। कांतम् उनसे कहेगी कि सारी गुड़ियाँ विजयवाड़ा के प्रसिद्ध 'वेंकोजी एण्ड संस' से खरीदी गयी हैं, और वहाँ गुड़ियाँ बहुत सस्ते दाम पर मिलती हैं।

कहानी में इस तरह लिखने से गुड़ियों का जितना प्रचार होगा और आपको जितना लाभ होगा, वह आप सोच ही लीजिए। उस पत्र के निकलते ही उसे 4 लाख लोग पढ़ेंगे। पढ़कर यह जान लेंगे कि आपकी कंपनी में अच्छी गुड़ियाँ सस्ते दाम पर मिलती हैं।

लेकिन एक कठिनाई है। मुझे यह पता नहीं है कि गुड़ियाँ कितनी प्रकार की होती हैं और आपके यहाँ कौन-कौन-सी गुड़ियाँ बिकती हैं। जब ये बातें मुझे ज्ञात नहीं है, मैं उनका वर्णन कैसे कर सकूँ? इसलिए आप एक काम कीजिएगा तो अच्छा रहेगा। आपके पास जो-जो गुड़ियाँ हैं, उनमें से प्रत्येक नमूने (मॉडल) की एक-एक-गुड़ियाँ मेरे पास भिजवाइएगा-अर्थात् कोंडपल्ली की काँच, सेल्युलायड, रबड़ और चीनी मिट्टी की गुडियों के नमूने आदि-आदि। यदि इनमें भी अलग-अलग डिजाइन हो तो उनमें से भी एक-एक। यदि प्रत्येक डिजाइन में तरह-तरह की गुड़ियाँ-कुत्ते, बिल्ली, सिंह आदि हो तो उनमें से भी एक-एक भिजवाइए। उन सबका सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करके उनके विस्तृत वर्णन के साथ मैं कहानी लिखूँगा। 4 लाख लोग आपकी गुड़ियों की कहानी उस पत्र में पढ़कर आपकी दुकान के पास भीड़ लगाएँगे। गुड़ियाँ खरीदने के लिए। आप जैसे बड़े व्यापारी लोगों को विज्ञापन की महत्ता के बारे में अलग-अलग बताने की ज़रूरत नहीं है।

आशा है कि आप पत्र में उल्लिखित विधि के अनुसार गुड़ियाँ भिजवाएँगे।

उत्तराभिलाषी

भवदीय

वेंकटराव।

SCERT TELANGANA

पत्र लिखने के बाद महसूस हुआ कि भारी बोझ उतर गया। अपनी इस बुद्धिमानी पर मुझे गर्व हुआ। तभी 'कांतम्' को जगा कर यह बात बताने की इच्छा हुई। फिर थोड़ी देर सोचकर निश्चय कर लिया कि अभी उसे बताना ठीक नहीं है। अगले दिन भी यह बात उसे बताने की इच्छा नहीं हुई। हाँ, इतना तो बता दिया कि संक्रांति के लिए अवश्य गुड़ियाँ आएँगी। 'कांतम्' उससे संतुष्ट हुई। दो दिन के बाद 'वेंकोजी एण्ड संस कंपनी' से चिट्ठी आयी।

सेवा में, विजयवाडा

महोदय जी,

बन्दर।

महोदय,

आपने हमारे ऊपर जो एहसान दिखाया है, उसके लिए हम आभारी हैं। हमारी गुड़ियों की विशेषता के बारे में अब तक बहुतों को मालूम है और हमारा व्यापार भी आपकी कृपा से ठीक ही चल रहा है।

फिर भी आप जैसे मूर्धन्य लेखक की कहानियों द्वारा हमारी गुड़ियों के बारे में, एक जनप्रिय पत्र में छपकर सबको विस्तृत विवरण मिलना, वास्तव में हमारे लिए अधिक लाभप्रद बात होगी, यह हमारा विश्वास है।

यह अधिक उचित ही है कि आप स्वयं हमारी गुड़ियों को देखकर उनका वर्णन करें। आपका पत्र हमने अपने मालिक के सम्मुख प्रस्तुत किया है। वे यथोचित कार्य करके आपको यथा शीघ्र इसकी सूचना देंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

रामय्या

कृते-वेंकोजी एण्ड संस कंपनी

चिट्ठी मिलते ही जितना संतोष हुआ, उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। उसके बाद यह प्रश्न सामने आया कि बचे हुए रुपयों से बच्चों के लिए कपड़े खरीदना है या कांतम् के लिए साड़ी लेना है?

''अरे बच्चों के लिए क्या, जो कुछ भी कपड़े हैं सो ठीक ही है। रेशमी साड़ी खरीदिएगा मेरे लिए। चार-पाँच साल के बाद वह हमारी लड़की के लिए भी काम में आ जाएगी। कांतम् ने सलाह दी।'' मैंने एक पत्र लिखा।

चेल्लाराम गंगाराम कंपनी, बंदर

SCERT TELANGANA

मद्रास,

महोदय,

पेद्दापुरम् रेशमी साड़ी या पुदुच्चेरी रेशमी साड़ी इनमें से कोई एक, जिसका दाम दस रुपये से अधिक न हो, वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें।

भवदीय

वेंकटराव

एक और पत्र अपने साले साहब को लिखा।

चिरंजीव रामराव, बंदर

शुभाशीश,

इस संक्रांति को बच्चे गुड़ियों का त्यौहार मनाने वाले हैं। इसके लिए स्वदेशी गुड़ियों के अतिरिक्त, जापान, जर्मनी आदि विदेशों की विचित्र गुड़ियाँ मँगा रहा हूँ। उन सबको ठीक तरह से सजाने के लिए तुम्हारी बहन सारा प्रबंध कर रही है। तुम्हें सपरिवार आकर इन सुंदर गुड़ियों का दृश्य अवश्य देखना होगा। आशा है, तुम दोनों बच्चों के साथ संक्रांति के दिन आओगे।

तुम्हारा

वेंकटराव

कांतम् ने भी अपनी छोटी बहन को एक पत्र लिखा।

बहन, बंदर

यह प्रसन्नता की बात है कि ईश्वर की कृपा से जो कुछ मिला, उससे तुम तृप्ति का अनुभव करते हुए परिवार के साथ सुखी जीवन बिता रही हो। गुंटूर में जब हम मिले थे, उस समय तुमने मुझसे कहा था कि तुम्हारे बच्चे गुड़ियों के लिए जिद करते हैं। इस संक्रांति के लिए तुम्हारे जीजाजी भी अनेक चित्र-विचित्र गुड़ियाँ मँगा रहे हैं। मैं सोच रही थी कि हमारी पुरानी गुड़ियाँ सारी तुम्हें भेज दूँ। इतने में हनुमंतराव गुंटूर जाते हुए मुझसे कहने आया था कि कोई समाचार तुम्हारे लिए हो तो बताऊँ, तो मैंने उसके हाथ उन गुड़ियों को तुम्हारे पास भेजा। गुड़ियों के मिलते ही बच्चों की कुशलता के बारे में पत्र लिखो। बच्चों को प्यार।

तुम्हारी

कांतम्

अब तक 'वेंकोजी कंपनी' से न कोई पत्र आया और न कोई रेलवे रसीद। मद्रास से तो रेशम

SCERT TELANGANA

की साड़ी आई। उस वी.पी.पी. को छुड़ाकर मैंने उसे कांतम् को दिया तो वह प्रसन्न हुई। मुझसे उसने पूछा- 'क्यों जी, साड़ी तो आ गई, गुड़ियाँ कब आएँगी?''

''वे भी आ जाएँगी - आज या कल'' मैंने कहा, ''समुद्रगुप्त की तरह मानो हार को कभी नहीं जानते हो।''

''पैसा तो नहीं आपके पास, तो खरीदेंगे कैसे?'' कांतम् ने पूछा, कुछ संदेह से।

''यह जिम्मेदारी मेरे ऊपर छोड़ दो।'' मैंने कहा ''वे आज या कल आ जाएँगी - बस।''

''हाँ, गुड़ियाँ नहीं आएँगी तो मैं चुप नहीं रहूँगी।'' कांतम् ने प्रत्युत्तर दिया। मैं सोचने लगा कि अब तक 'वेंकोजी एण्ड संस कंपनी से कोई पार्सल क्यों नहीं आया? रेलवे पार्सल भेजने से खर्च ज़्यादा होगा। संभवतः यह समझ कर वे आगा-पीछा कर रहे होंगे। खैर, एक पत्र लिखना ठीक होगा, समझ कर मैंने उनके नाम एक और पत्र लिखा।

वेंकोजी एण्ड संस कंपनी बंदर

विजयवाडा

महोदय,

अभी आपसे गुड़ियों के भेजने के बारे में कोई उत्तर नहीं आया। इसका कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मैं कल शुक्रवार को तेनाली जा रहा हूँ। वहाँ से फिर शनिवार को सबेरे की गाड़ी से 'बंदर लौटूँगा। आप गुड़ियों को पैक कराके अपने आदमी के हाथ गाड़ी के समय विजयवाड़ा स्टेशन भेज देंगे तो मैं उन्हें ले लूँगा।

भवदीय

वेंकटराव

हमारी लड़की सबसे कह रही है कि पिताजी शनिवार को चित्र विचित्र गुड़ियाँ देंगे। मेरी पत्नी ने भी सभी अड़ोस-पड़ोस से कह दिया कि मैंने किसी बड़ी कंपनी से चित्र-विचित्र गुड़ियाँ मँगाई। सब प्रतीक्षा करने लगे कि शनिवार कब आएगा।

मैंने उस दिन रात को स्वप्न देखा कि हमारा घर चित्र-विचित्र गुड़ियों से सज गया। शहर के सारे लोग आकर उत्सुकता से पूछ रहे हैं कि इतनी अच्छी गुड़ियाँ कहाँ से मँगाई गयी। मेरी पत्नी और मेरे बच्चों के आनन्द की सीमा न रही। लोग कहते हैं कि जो स्वप्न में देखा जाता है, वह सही नहीं हो सकता। मुझे संदेह हुआ कि कहीं मेरा स्वप्न स्वप्न न रह जाए।

शुक्रवार की शाम की डाक से उस कंपनी से पत्र आ ही गया। पत्र खोलते हुए हाथ काँपने लगा। भगवान को स्मरण कर के पत्र खोल कर पढ़ने लगा -

सेवा में, विजयवाडा

SCERT TELANGANA

वेंकटराव,

बंदर

महोदय,

आपके दोनों कृपा पत्र हमारे मैनेजर ने मुझे दिखाए। आपने हमारे ऊपर जो दया दिखायी है, उसके लिए हम आपके अत्यंत कृतज्ञ हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे लेखकों की रचनाओं के द्वारा हमारी गुड़ियों की प्रशंसा सुनकर लोग हमारी चीज़ों को खूब खरीदेंगे और हमारे व्यापार की श्रीवृद्धि होगी।

आपने लिखा है कि आप स्वयं गुड़ियों को देखकर उनकी प्रशंसा लिखेंगे। इससे बढ़ कर संतोष की बात क्या हो सकती है? तेनाली से बंदर आते समय आप विजयवाडा होते हुए ही आएँगे। स्टेशन से हमारी दुकान बहुत ही नज़दीक है। आप कृपा करके स्टेशन उतरकर हमारी दुकान पधारिए। आपके स्वागतार्थ स्टेशन पर मैं अपने एक नौकर को भेज दूँगा। आप स्वयं दुकान में पधार कर स्वयं सारी गुड़ियों का निरीक्षण करेंगे तो बहुत उत्तम रहेगा। उस दिन आपको दुकान की सारी गुड़ियों को दिखाने के लिए मैं व्यवस्था करवा रहा हूँ। हाँ, साथ ही एक और विनती है, आप उस दिन शाम को मेरे साथ कॉफी पीने की कृपा करें तो आभारी रहूँगा।

कष्ट के लिए क्षमा।

भवदीय

वेंकोजी

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ - दस पंक्तियों में लिखिए।

1. लेखक ने वेंकोजी एण्ड संस कंपनी से कुछ गुड़ियों के नमूने भिजवाने के लिए क्यों लिखा होगा?
2. संक्रांति त्यौहार में गुड़ियों का क्या महत्व है?
3. वेंकोजी एण्ड संस कंपनी के मालिक का पत्र पढ़ने के पश्चात लेखक की क्या प्रतिक्रिया रही होगी? स्पष्ट कीजिए।
4. यह तेलुगु से अनूदित कहानी है। अन्य भाषा की ऐसी ही कोई एक कहानी ढूँढ़कर लिखिए।

SCERT TELANGANA